पेरेन्टिंग स्टाइल्स तथा किशोरों के मूल्यों में सम्बन्ध

डॉ. सीमा जोशी

मानव की वृद्धि एवं विकास की प्रक्रिया का अध्ययन लम्बे समय से बहस का विषय बना हुआ है। बीसवी शताब्दी से सभी का विशेष ध्यान मानव विकास की जिस अवस्था की तरफ रहा है, वह है किशोरावस्था। किशोरावस्था मुख्य अवस्था है क्योंकि इस अवस्था के निश्चित विकासात्मक प्रतिमान हैं। अर्थात् इस समय इस आयुस्तर की विशिष्ट विशेशतायें दृष्टिगोचर होती है। किशोरावस्था के सम्बन्ध में यह परम्परागत विश्वास रहा है कि किशोरावस्था विकास की एक क्रान्तिक अवस्था है। इस अवस्था में बालक को ना बालक कह सकते है और न ही प्रौढ़ व्यक्ति कह सकते है क्योंकि इस अवस्था में बालक के शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक गुणों में परिवर्तन प्रौढावस्था की दिशा में होते है। शब्द के यदि शाब्दिक अर्थ को देखे तो यह स्पष्ट होता है कि शब्द ।कवसमेबमदबम की उत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द से हुई है जिसका अर्थ है परिपक्वता की ओर बढ़ना। इस तरह से किशोरावस्था एक अवस्था न होकर एक प्रक्रिया है सामाजिक अन्तःक्रियाओं के लिये आवश्यक अभिवृत्तियों एवं विश्वासों के विकास की प्रक्रिया।

बैतवदवसवहपबंससल अर्थात् वास्तविक आयु की दृष्टि से यह अवस्था लगभग 12-13 साल से लेकर 18-19 साल अर्थात् यौन परिपक्वता आने तक की अवस्था है। फिर भी इसमें व्यक्तिगत भिन्नता होती है। व्यक्तिगत भिन्नताओं के कारण कुछ बालक-बालिकाओं में किशोरावस्था के लक्षण शीघ्र और अधिक स्पष्ट ढंग से प्रकट होने लगते है जबकि कुछ में इन लक्षणों की उत्पत्ति ओर विकास कुछ देर से होता है। साथ ही लड़कियों में किशोरावस्था लड़कों से 1 से 2 साल शीघ्र आती है। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि किशोरावस्था वयः संधि के बाद की वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति की शारीरिक एवं मानसिक वृद्धि पराकाष्ठा या अन्तिम रूप पर पहुँचती है। इस अवस्था में व्यक्ति में आत्मउत्तरदायित्व का स्थापन होता है।

किशोरावस्था आने पर बच्चों में शारीरिक परिवर्तन के साथ साथ यौन परिपक्वता भी आती है ठमतव्रवदोल ;1982द्ध ने कहा है कि यही परिवर्तन इस अवस्था में मुख्य यप से चित्ता का स्रोत है। इस अवस्था में किशोर में सामाजिक तथा संवेगात्मक परिवर्तन भी आते है। सामाजिक परिवर्तन से तात्पर्य है कि किशोरों को समाज के आदर्शो और मूल्यों को समझने के साथ साथ आवश्यक हो जाता है कि वह समाज के विभिन्न व्यक्तियों के व्यवहार, विचार तथा भावनाओं को समझना सीखे, जब तक वह इनको नहीं सीखेगा तब तक उसके लिये समाज की विभिन्न परिस्थितियों में समायोजन करना कठिन होगा। संवेगात्मक परिवर्तन से तात्पर्य है कि किशोरावस्था गम्भीर उथल पुथल की अवस्था है क्योंकि किशोरों में संवेगात्मक अस्थिरता और अति संवेगात्मकता अपेखाधिकृत अधिक होती है। इसका मुख्य कारण शारीरिक और ग्रन्थीय परिवर्तन साथ ही सामाजिक सम्बन्धों में व्यापकता है जिसके कारण समायोजन में जटिलता उत्पन्न होती है।

संवेगात्मक अस्थिरता तथा अति संवेगात्मकता का सभी किशोरों में पाया जाना आवश्यक नहीं है। यह देखा गया है कि जिन किशोरो की शिक्षा दीक्षा लालन पालन उपयुक्त ढंग से होता है। उनमें इस प्रकार के लक्षण अपेक्षाकृत कम मात्रा में पाये जाते है।

इस काल में माता पिता का बच्चों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध उन्हें नवीन परिस्थितियों के साथ बड़ा होने और इससे जुड़ी जिज्ञासाओं को समझने के लिये प्रेरित करता है। यह प्रेरणा उसे खुद को बेहतर तरीके से समझने के साथ साथ समाज के द्वारा उसके सम्बन्ध में बनायी जाने वाली धारणाओं व अपेक्षाओं के साथ समायोजन करने में सहायता करती है और इन प्रक्रियाओं से ही वह सम्पूर्ण समाज से जुड़ता है। यह वह अवस्था है जिसमें उसकी वैयक्तिक एवं मानसिक सम्पूर्णता के साथ साथ मूल्य जुडते है जो उसे सम्बन्धों के बनाने के साथ साथ उनकी निरंतरता के प्रति कार्यशील रखते हैं।

मूल्य व्यक्ति का एक प्रकार का विश्वास है या किसी मान्यता व विचारधारा के प्रति अभिवृत्तक रूप है जिसे जीवन में महत्वपूर्ण मानकर व्यक्ति वैसा ही अपने व्यवहार को बनाना पसंद करता है। मूल्य वे प्रेरणात्मक तत्व हैं जो मनुष्य की भावनाओं को विशेष दिशा देते है जीवन का नियंत्रित करते है तथा जीवन के सभी पहलुओं यथा हमारे विचार, संवेग, क्रियायें सभी को प्रभावित करते है। इसलिये मूल्य कसकारात्मक या नकारात्मक केसे भी हो हमें एक पहचान देते हैं।

मूल्य एक व्यक्ति की परिस्थिति एवं तवातावरण के सम्बन्धों का परिणाम होते है। अतः हम कह सकते है कि मूल्य समाजीकरण की प्रक्रिया का परिणाम होते है। हालांकि समाजीकरण की प्रक्रिया में बहुत से सामाजिक कारक तथा समूह मूल्य विकास को प्रभावित करते है फिर भी सभी समूहों में सबसे महतवपूर्ण तथा प्रभावशाली कारक परिवार है।

Gru sec (2000) अध्ययन के आधार पर बताया कि मूल्यों के अभिग्रहण के लिये परिवार में माता पिता ही प्राथमिक स्रोत होते है। हालांकि यह भी सत्य है कि मूल्य अभिग्रहण के स्रोत केवल माता पिता ही नहीं होते है, लेकिन इनका योगदान सबसे अधिक होता है क्योंकि बच्चा अपने बचपन को ज्यादा समय माता पिता के साथ व्यतीत करता है और बच्चे अपने माता पिता का अनुकरण करते है तथा सामान्यतः उनके सामने आदर्श रूप में माता पिता ही होते है और उनका अनुकरण करते करते वही आदश्र उनकी आदत और उनका स्वभाव बन जाते हैं।

इसी संदर्भ में मैंने भी माता पिता द्वारा प्रयुक्त लालन पालन पद्धतियों तथा किशोरों के मूल्यों के बीच सम्बन्धों को खोजने का प्रयास

प्राध्यापक, गृह विज्ञान, एस.एस.जी. पारीक पी.जी. महिला महाविद्यालय, जयपुर

किया। इसके लिये मैंने जयपुर शहर के उच्च मध्यम वर्ग के 300 किशोर जो कक्षा 8 से 10 में अध्ययनरत थे तथा उनके माता पिता को सैम्पल के रूप में लिया फिर 600 के इस सैम्पल को लैंगिक आधार पर चार समूहों माता-पुत्र, माता-पुत्री, पिता-पुत्र एवं पिता-पुत्री में बाँटा तथा प्रश्नावली विधि द्वारा आकड़े एकत्रित किये। मूल्यों को जानने के लिए हमने Rokeach value surveyका इस्तेमाल किया जिसमें 36 मूल्य हैं जिन्हें 7 Domin में रखा गया फिर इन को तीन क्षेत्रों में तथा individual, Collective & mixed Intrest में बाँटा गया।

आजकल माता पिता बच्चों के मूल्य हास का सम्पूर्ण दोष मीडिया विशेष रूप से टेलीविजन, संस्कृति को देते है लेकिन अनुसंधान के परिणामों से तो ऐसा नहीं लगता। मैं यह नहीं कहती कि बच्चों पर मीडिया का असर नगण्य है, क्योंकि आजकल माता पिता दोनो ही कार्यशील है इसलिये किशोर का ज्यादा समय मीडिया तथा अन्य सामाजिक समूहों क साथ बीतता है। अत: उनका बहुत असर होता है लेकिन फिर भी हम सम्पूर्ण दोष मीडिया पर डालकर स्वयं का पल्ला नहीं छोड़ सकते है। इसलिये मैँ अपने इस शोध पत्र द्वारा माता पिताओं को सचेत करना चाहती हूँ कि वो बच्चों पर मूल्यों को थोपे नहीं अपितु स्वयं को अच्छे रोल मॉडल के रूप में प्रस्तुत करे जिससे किशोर उनसे कुछ सीखकर अच्छे नागरिक, अच्छे इंसान के रूप में विकसित हो सके एवं माता पिता अपने व्यवहार में दृढता रखे तथा बच्चों का इस तरह से लालन पालन करे कि बच्चे उनके साथ सुरक्षित और आनन्दित महसूस कर सके क्योंकि माता पिता की लालन पालन पद्धति भी किशोरों के मूल्यों को प्रभावित करती हैं साथ ही मैं सरकार से भी यही कहूंगी कि वैश्वीकरण के समय में हम किशोरों को मीडिया से बिल्कुल अलग नहीं कर सकते अत: मीडिया भी मूल्य परक विचारों वाले कार्यक्रमों का प्रचार प्रसार करे।

इस तरह से परिवार तथा मीडिया के बीच में संतुलन रखकर ही अच्छे मूल्यपरख विकसित देश के लिये डाली जा सकती है।

संदर्भ सूची

1. Muss R.E. (1962) Theories of adolescene, New York, Random House.
2. Berzonskym, M.D. (1982) Inter and Intra-individual differences in adolescent storm and stress : A life span developmental view. Journal of early Adoloecence, 2.211-217
3. Grusec John E. Goodnow, and Kuczynski (2000), New Direction in analysis of parenting contributions to childern's Acquisition of Values, child Development, 71, 1, 205-211